ओम् शान्ति 28-12-09 मधुबन

प्यारे बापदादा के अति स्नेही, यज्ञ के आदि रत्न चन्द्रहास बाबू जी ने 27 दिसम्बर 2009 रात्रि 9.30 बजे अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। 28 तारीख मधुबन में दादी जानकी, दादी रत्न मोहिनी तथा सभी वरिष्ठ भाई बहिनों ने बाबू जी को श्रधा सुमन अर्पित करते, चारों धामों की यात्रा कराई, तत्पश्चात आबू की परिक्रमा कराते हुए दोपहर 11.30 बजे शमशान घाट पहुंचें जहाँ दादी रत्न मोहिनी जी ने मुखाग्नि थी तथा ओम् शान्ति के महामन्त्र के साथ उनके पार्थिव शरीर का अन्तिम संस्कार किया गया। उसके पश्चात मधुबन में शशी बहन ने बापदादा को विशेष भोग लगाया, वतन का सन्देश आप सबके पास भेज रहे हैं:-

आज आप सभी भाई-बहनों की स्नेहभरी याद लेकर जैसे ही मैं वतन में पहुँची तो देखा कि एक बहुत सुन्दर कमरा है, जो चारों तरफ बाहर से डेकोरेशन की लाइट की किरणों से बहुत ही सुन्दर सजा हुआ है। मैंने सोचा इसके अन्दर कौन होगा! तो जैसे ही मैंने ध्यान से देखा तो उस कमरे में बाबा और बाबा के साथ दादा चन्द्रहास दोनों बहुत गहरी रुहरूहान कर रहे थे। थोड़े टाइम के बाद बाबा ने मुझे देखा तो कहा कि आओ बच्ची अन्दर आओ। जैसे ही मैं अन्दर पहुँची तो बाबा मेरे को दृष्टि दे रहे थे लेकिन चन्द्रहास दादा तो जैसे बाबा के स्नेह में खोये हुए थे। बाबा को ही देख रहे थे और बाबा के साथ मिलन मनाने में मगन थे। उनके चेहरे से मुस्कराहट से ऐसे लग रहा था जैसे बाबा को कह रहे हों कि बाबा आपने तो कमाल कर दिया। तो बाबा ने कहा देखो बच्चे कौन आया है? मैंने कहा बाबूजी आप तो बिना बताये ही चल पड़े, कैसे आप बाबा के पास वतन में चले आये! मधुबन में तो सब भाई-बहनें आपको बहुत याद कर रहे हैं! तो बाबू जी बोले, मैं चला थोड़ेही गया हूँ। मेरे को था कि मैं भी थोड़ा उड़ूँ तो ऐसे उड़ा और जैसे उड़ते उड़ते मैं बाबा के पास पहुँच गया। ऐसे कहते बाबा की तरफ देखते बहुत मुस्कराने लगे। मैंने कहा आप बाबा के पास अभी क्या कर रहे हैं? तो बोला, बाबा की कमाल है, बाबा तो कमाल करते हैं।

तो इतने में क्या देखा कि उसी कमरे में अलग-अलग प्रकार के बॉक्सेस रखे हुए थे। मैंने कहा यह सब बॉक्सेस क्या है? बाबा ने कहा तुम देखो, तो जब मैं उन्हें देखने लगी तो जैसे वो आपेही खुलते जाते हैं, तो उसमें बहुत सारी वैराइटी चीज़ें दिखाई दी। एक में बहुत सुन्दर डिजाइन्स बने हुए रखे थे। दूसरे में बहुत सारे डायमण्ड इकट्ठे थे। तीसरे में बहुत सुन्दर छोटे-छोटे एंजिल के मॉडल्स, चौथे में शतरंज रखा हुआ था। इन सब चीज़ों को देख मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ।

तो बाबा ने कहा बच्ची, इस बच्चे ने शुरू से यज्ञ में बहुत लगन से सेवायें की हैं, बाबा ने जो इसको कन्स्ट्रक्शन का काम दिया, बहुत लगन से किया, सबको सुख दिया है। सदा ही यज्ञ की एकॉनामी का भी ध्यान रखा और दूसरों का भी एकॉनामी पर ध्यान खिंचवाया। दूसरा बच्चे ने गुप्त रीति से ज्ञान रत्नों का स्टोर किया हुआ था। मुरलियों के खज़ानों के अलावा रोज़ बाबा के पास रात को बैठता था मालिश करने के लिए, उस समय बाबा के गुप्त रत्न चोरी करता रहता था। बहुत कुछ इसने बाबा के गुण और बाबा क्या करता है, ऐसे ऐसे खज़ाने, ऐसे ऐसे रत्न इसने अपने पास जमा किये हुए हैं। तो मैंने देखा कि उन रत्नों से बहुत लाइट निकल रही थी। तो बाबू जी ने कहा देखो बाबा रात को मेरे को बहुत समझाते थे, मैं बाबा से मीठी मीठी रूहरूहान करता था, बाबा से हँसी मज़ाक भी करता था, और बाबा हर बात में मुझे ज्ञान का कोई न कोई राज़ बताते थे।

फिर मैंने कहा कि यह शतरंज क्यों रखा हुआ है? तो बोला मैंने बाबा के साथ सखा रूप से भी बहुत अच्छा पार्ट बजाया है। बाबा के साथ खेलता भी था, केवल खेलता ही नहीं था लेकिन और साथियों को भी साथ देते बाबा की याद दिलाता था। फिर बाबा ने दादा को ऐसे गोदी में लेकर सिर पर हाथ रखा और

एक बहुत सुन्दर चमकीली ड्रेस के साथ क्राउन पहनाया। यह दृश्य बहुत सुन्दर लग रहा था। फिर देखा कि आप सभी भाई बहिनें भी वहाँ चारों इमर्ज हो गये। सभी मधुबन निवासी, डिपार्टमेन्ट के अन्य सभी भाई बहनें बाबा के सामने थे और बाबू जी भी देख-देख खुशी में बहुत मुस्करा रहे थे। मुस्कराते बोले कि मैं गया थोड़ेही हूँ, मैं तो बाबा के पास हूँ। इतने में देखा कि सबके स्नेह की बहुत-सी मालायें दादा के गले में पड़ती जा रही हैं। तो दादा बाबा को कहने लगे कि बाबा यह सारी मालायें मेरे को क्यों पहना रहे हैं? बाबा ने कहा सब बच्चों का आपके साथ कितना स्नेह है! तो यह स्नेह की मालायें आपको आज सभी बहुत प्यार से पहना रहे हैं। आपने हर सेवा में सबको आगे बढ़ाया, कार्य करने का तरीका सिखाया और स्नेही बन करके उनको मजबूत भी बनाया। तो आज वो स्नेह का रिटर्न दे रहे हैं। तो दादा मुस्कराते बोले, नहीं बाबा यह तो आपने किया है। आपकी कमाल है, आपने इतनी बड़ी रचना रच दी। हम तो सोचा ही नहीं था, इतना बड़ा विशाल कार्य आपने किया है। तो मैंने कहा सब दादियाँ आपको याद कर रही हैं तो कहा कि मैं भी तो याद कर रहा हूँ। ऐसे कहते ही फिर बाबा के पास ऐसे गोदी में चले गये, तो बाबा ने कहा देखो बच्चे मधुबन से खास तुम्हारे लिए भोग आया है। तो उसी समय बाबा ने बड़ी दादी को इमर्ज किया और दादी जानकी, रतनमोहिनी दादी, गुल्जार दादी और सीनियर सभी थे और सबने उनको घेर लिया, तो वो सबके बीच में सर्कल में बहुत रास कर रहे थे। रास करते-करते कहते हैं, सब खुशी में रहें, सब बाबा के बच्चे सुखी रहें, सब एक दूसरे को सुख दें और खुशी में झूमते रहें। बाबा के हर कार्य में बस एक दूसरे को सहयोग देते आगे बढ़ते रहें तो जैसे बाबा अभी कमाल कर रहा है, ऐसे हरेक कमाल करके दिखायेंगे।

फिर कहा कि मधुबन वाले तो जिम्मेवार है और बाबा ने इनको बहुत जिम्मेवारियाँ दी हैं, उसे मधुबन वाले लगन से कर भी रहे हैं, ऐसे करते जायें तो बाप का नाम भी प्रत्यक्ष करेंगे और बाबा का कार्य भी जल्दी जल्दी सम्पन्न करेंगे। मैंने कहा दादा, आप तो चले आये आपको देख करके सभी खुश होते थे, तो कहा कि नहीं अब तो सबको यह कार्य जल्दी-जल्दी करना है इसलिए सब जल्दी-जल्दी शक्तिशाली बनते जाएं। फिर बाबा अपने हाथ से दादा को भोग स्वीकार कराने लगे। तो दादा कहे पहले आप, बाबा कहे पहले आप क्योंकि आज तो आपके निमित्त आया है। तो बाबा ने उनको खिलाया और दादा ने भी बाबा को खिलाया। फिर दादा कुछ सेकण्ड के लिए शान्त हो गये, तो मैंने कहा दादा कुछ कहना है? तो चुप, फिर मैंने कहा दादा कुछ बोलो। तो बोला कि सभी जो मेरे सेवा साथी हैं, मधुबन का एक एक भाई और बहन बाबा के कार्य के अन्दर और अच्छा तीव्र पुरूषार्थ करके, त्यागी तपस्वी बन करके कार्य करेंगे तो कार्य में सफलता भी होगी, बाबा ने जो हमें त्याग तपस्या सिखाई है, वैसा ही हर एक बनकर दिखाये। तो मैंने कहा कि दादा आपके सभी साथी आपको याद कर रहे हैं, खास जो सेवा में थे तो मैंने उनकी भी याद दी, तो बोला सभी मेरे साथ हैं, सबको याद दिया। हरेक डिपार्टमेन्ट वालों के लिए कहा कि सब बाबा के साथ हैं, सब मेरे साथ हैं, सबको बहुत बहुत याद देना और कहना कि यज्ञ के कार्य के अन्दर सभी त्यागी और तपस्वी बनके, शक्तिशाली बनके कार्य करेंगे तो बाबा का यह कार्य जो है वो जल्दी सम्पन्न होगा। बाबा के हर कार्य में सहयोगी और ब्राह्मण परिवार में एक दूसरे के स्नेही और सहयोगी बन करके कार्य करते रहेंगे तो बाबा को भी खुशी होगी और कार्य भी जल्दी सम्पन्न होगा। ऐसे यादप्यार लेते हुए मैं साकार वतन में आ गई। अच्छा - ओम् शान्ति।